बालिकाओ की उच्च शिक्षा के प्रति अभिभावको की अभिवृत्ति का विश्लेषण

डॉ. अबंतिका मिश्रा

सहायक आचार्य, वेदांत कॉलेज ऑफ एजुकेशन, गढ़मुक्तेश्वर – हापुड़ (उ०प्र०)

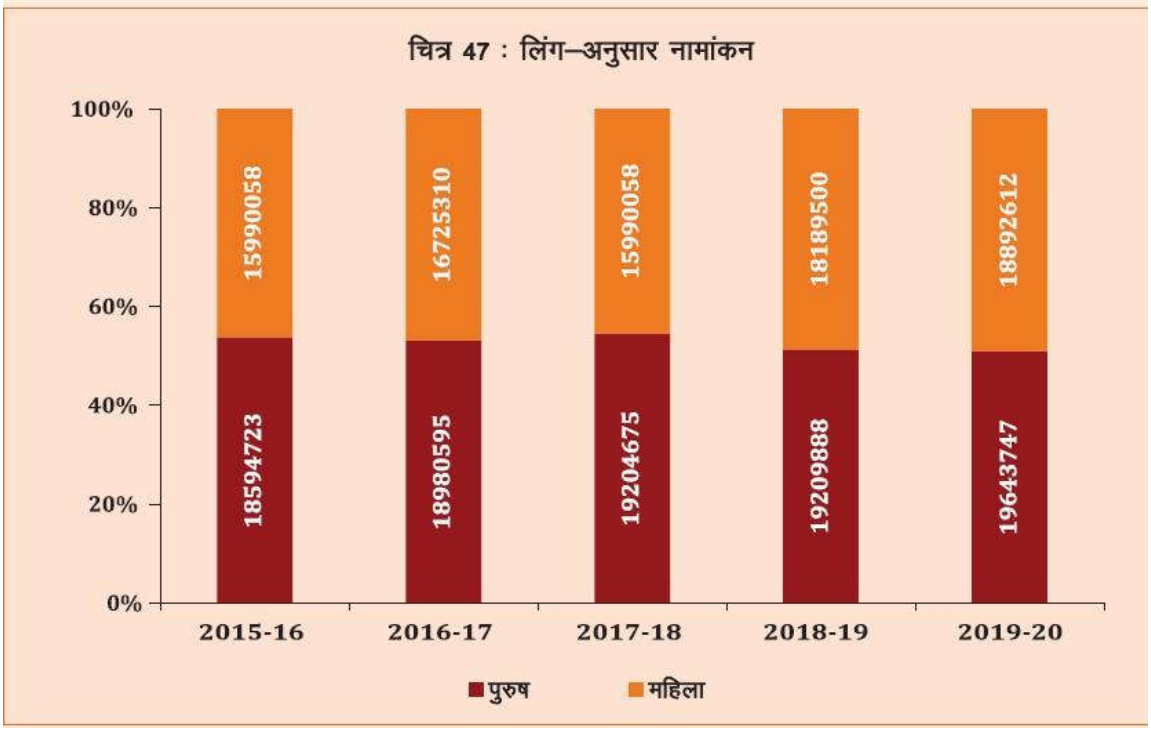
सारांश

बालिकाओ के लिए आर्थिक गतिविधियों में उनकी भागीदारी बढ़ाने और निर्णय लेने की भूमिकाओं में एक महत्व हासिल करने के लिए शिक्षा एक अनिवार्य उपकरण है. जहा शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य जीवकोपार्जन में सक्षम बनाना है जिसमे व्यावसायिक शिक्षा प्रमुख भूमिका निभाती है उसमे बालिकाओ के नामांकन का कम प्रतिशत ये बताता है अभी बालिकाओ के लिए आर्थिक स्वतंत्रता की मंजिल पाने के लिए सफर बाकी है अभिभावकों की बालिकाओ की उच्च शिक्षा के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक अभिवृति उच्च शिक्षा में उनके नामांकन को अनिवार्य रूप से प्रभावित करती है।

संकेत शब्द *– उच्च शिक्षा, बालिकायें, अभिभावको की अभिवृत्ति।*

प्रस्तावना :–

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में कुछ पारम्परिक मान्यतायें, धार्मिक बाध्यतायें तथा सांस्कृतिक पहलू ऐसे हैं जो समाज के अपना भविष्य उज्जवल बनाने के मार्ग में बाधा उत्पन्न करते है । उन्हीं में से एक है लिंग–भेद. हमारे समाज में लड़कियों की शिक्षा पर आज भी उतना ध्यान नहीं दिया जाता जितना कि लड़कों की शिक्षा पर। हमारी सामाजिक व्यवस्था व परम्पराओं ने जन्म से ही लड़के व लड़की में भेद किया है। इसी कारण से लड़के–लड़कियों के पालन–पोषण रहन–सहन शिक्षा–दीक्षा व चिकित्सा सम्बन्धी सुविधाओं को उपलब्ध कराने में अधिकाधिक विभेद पाया जाता है। लड़के को जहाँ कुलदीपक, पारिवारिक यश व प्रतिष्ठा का प्रतीक समझा जाता है वहीं लड़की को पराई सम्पत्ति व दहेज आदि कारणों से बोझ व अभिशाप माना जाता है। देश की स्वतन्त्रता के 75 वर्ष व्यतीत होने के पश्चात भी महिला–शिक्षा में कोई विशेष उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं हुआ है। इसी कारण से भारतीय सामाजिक स्वरूप व चेतना में जो अपेक्षित परिवर्तन होना चाहिए था, वह नहीं हो पाया है। फिर भी यदि तुलनात्मक रूप में देखा जाये तो स्वतन्त्र भारत में स्त्रियों की स्थिति में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ है। नटराजन 1984" के अनुसार यदि सौ वर्ष पूर्व मरने वाला व्यक्ति आज फिर जीवित हो जाये तो उसे आश्चर्यचकित करने वाला सर्वप्रथम एवं सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन– स्त्रियों की स्थिति में क्रान्तिकारी परिवर्तन होगा। स्त्रियों की स्थिति में इस क्रान्तिकारी परिवर्तन के बावजूद परम्परागत संकुचित सामाजिक दृष्टिकोण नारी की महत्ता को स्वीकार नहीं करता है। वह नारी शिक्षा का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से विरोध करता है भले ही उसकी सन्तान निरक्षर रह जाये। वह अपनी रूढ़िवादिता, धार्मिक – संकीर्णता तथा नारी जाति पर शासन करने की चिरकाल से विरासत में मिलने वाली धारणा का परित्याग करने हेतु तैयार नहीं है भले ही प्रजातंत्र की मांगों की पूर्ति न हो भले ही भारत स्त्रियों की अशिक्षा के कारण प्रगति की दौड़ में अन्य देशों से पीछे ही क्यों न रह जाये द्य किन्तु सरकार तथा प्रगतिशील विचारों वाला सामाजिक वर्ग बालिकाओं के साथ है। यही कारण है कि स्वतन्त्र भारत में समस्त क्रान्तियों के मध्य शताब्दियों से शोषित नारी ने जबरदस्त अंगड़ाई ली है। वह शिक्षा के समान अवसरों का प्रयोग करके सभी क्षेत्रों में सक्रिय है फिर भी यह सत्य है कि बालिकाओं की शिक्षा दबे पाँव रेंगती हुई आगे बढ़ रही है। उच्च शैक्षिक संस्थानों में बालिकाओ का नामांकन प्रतिशत बढ़ा है जैसा कि नीचे दी गई तालिका में देखा जा सकता है –



ऑल इंडिया सर्वे ऑन हायर एजुकेशन रिपोर्ट 2020

ऑल इंडिया सर्वे ऑन हायर एजुकेशन रिपोर्ट 2020 की यह तालिका बताती है 2015–16 से 2019–20 के विकास क्रम में यद्यपि तीव्र प्रगति दिख रही है फिर भी अभी उच्च शिक्षा में लिंग के आधार पर नामांकन में एक सतत चलने वाली यात्रा की ओर संकेत कर रहा है।

बॉक्स 14: व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में नामांकन

स्तर	प्रबंधन	शैक्षणिक			व्यावसायिक		
		पुरुष	महिला	कुल	पुरुष	महिला	कुल
स्नातक	सरकार	5230007	5305832	10535839	943885	648451	1592336
	सरकारी सहायता प्राप्त	2130852	2522181	4653033	316463	267341	583804
	निजी	3104669	3348370	6453039	3334039	2392963	5727002
स्नातकोत्तर	सरकार	767162	1168799	1935961	257039	191849	448888
	सरकारी सहायता प्राप्त	155677	321627	477304	32855	34845	67700
	निजी	201277	345859	547136	416906	350462	767368

ऑल इंडिया सर्वे ऑन हायर एजुकेशन रिपोर्ट 2020

इस तालिका को देखने से पता चल रहा है कि व्यावसायिक पाठ्यक्रमो की तुलना में अकादमिक पाठ्यक्रमो में बालिकाओ के नामांकन का प्रतिशत बालको की तुलना में कही अधिक है जो कि उल्लेखनीय है इस क्षेत्र में किये जा रहे सरकारी गैर सरकारी प्रयासों की सार्थकता की ओर इंगित करता है, बेटी बचाओ बेटी पढाओ अभियान इसी आकांक्षा में एक महत्वपूर्ण भूमिका का साधन बना द्यवही इसे यदि वर्तमान संदर्भ में देखा जाये जहा शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य जीवकोपार्जन में सक्षम बनाना है जिसमे व्यावसायिक शिक्षा प्रमुख भूमिका निभाती है उसमे बालिकाओ के नामांकन का कम प्रतिशत ये बताता है अभी बालिकाओ के लिए आर्थिक स्वतंत्रता की मंजिल पाने के लिए सफर बाकी है वे ऐसी कौन–सी भारी अड़चनें व समस्यायें हैं जिनके कारण बालिकाओं के लिए आज भी उच्च शिक्षा सहज व सुलभ नहीं बन पायी है। बालिकाओ के लिए आर्थिक गतिविधियों में उनकी भागीदारी बढ़ाने और निर्णय लेने की भूमिकाओं में एक महत्व हासिल करने के लिए शिक्षा एक अनिवार्य उपकरण है। प्रस्तुत पत्र का उद्देश्य लड़कियों की उच्च शिक्षा के प्रति माता–पिता के दृष्टिकोण का अध्ययन करना है हमारे समाज में बालिकाओं का स्थान वास्तव में इतना महत्वपूर्ण है कि उनकी शिक्षा की जानबूझकर की गई उपेक्षा पूरे समाज के लिए खतरा पैदा कर सकती है अक्सर कहा जाता है कि एक लड़के को पढ़ाना एक व्यक्ति को पढ़ाना है, एक लड़की–बच्चे को पढ़ाना एक परिवार और एक राष्ट्र को पढ़ाना है (फ्रेडरिक 1981)। शिक्षा के क्षेत्र में, महिलाएं अपने ज्ञान को अपने साथियों और परिवार के अन्य सदस्यों विशेष रूप से अपनी बेटियों को देती हैं जिससे उनकी शिक्षा का प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है। यह कहा जा सकता है कि जहां लड़कों और लड़कियों के लिए शिक्षा आवश्यक है, वहीं लड़कियों को शिक्षित करने के लाभ अधिक होते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि महिला शिक्षा का गरीबी में कमी और परिवार के आकार और महिला श्रम भागीदारी को प्रभावित करके सतत विकास के प्रावधान पर अधिक महत्वपूर्ण प्रभाव पाया गया है। इसलिए माता–पिता को हमेशा बालिका शिक्षा के इन गुणों के बारे में सोचना चाहिए और अपनी बालिकाओं को शिक्षित करने की अनुमति देनी चाहिए।मिश्रा (2012) ने अपने अध्ययन में बतायकि क्षेत्र . धर्म. शैक्षिक स्थिति ,जातिगत आधार ,पारिवारिक संरचना के आधार पर बालिका शिक्षा के प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति में अंतर पाया गया द्य सेमुअल ए (2020) ने अग्वोबो नाईजीरिया में बालिका शिक्षा के प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति का अध्ययन करते हुए बताया कि धार्मिक व आर्थिक कारक ओयो राज्य में भी माता–पिता की बालिका शिक्षा के प्रति खराब रवैये को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है क्योंकि बालिकाओं को प्रवासियों के रूप में देखा जाता है, यादव एवं यादव (2016) ने अपने अध्ययन में विवाह, जाति व्यवस्था और निम्न आर्थिक स्थिति जैसे कारको को बालिकाओ की उच्च शिक्षा के प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण माना द्य दास एवं कर (2018) ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि अनुसूचित जाति के माता–पिता अनुसूचित जनजाति के माता–पिता की तुलना में लड़कियों की शिक्षा के प्रति अधिक अनुकूल रवैया‘‘ रखते हैद्य लड़कियों की शिक्षा के प्रति लिंग व शिक्षा के आधार पर दृष्टिकोण में कोई खास अंतर नहीं पाया गया ।देवी मणितोम्बी (2020) ने मणिपुर में किये गए अपने अध्ययन में क्षेत्र व शिक्षा को माता दृपिता की अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाला प्रमुख कारक माना है।

अध्ययन का महत्व व उद्देश्यः–

प्रस्तुत अध्ययन बालिकाओ की शिक्षा के प्रति माता–पिता के नकारात्मक दृष्टिकोण को बदलने में सहायक सिद्ध हो सकेगा साथ ही माता–पिता के दृष्टिकोण के संबंध में बालिकाओ की शिक्षा की बाधाओं को समझने में सहायक सिद्ध हो सकेगा इस अध्ययन का उद्देश्य बालिकाओ की शिक्षा के प्रति माता–पिता की अभिवृत्ति का पता लगाना है।

1. ग्रामीण माता–पिता की बालिकाओ की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. शहरी माता–पिता की बालिकाओ की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
3. शिक्षित माता–पिता की बालिकाओ की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
4. अशिक्षित माता–पिता की बालिकाओ की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

परिकल्पनाऐं :–

1– क्षेत्र के आधार पर उच्च शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत बालिकाओ के अभिभावको की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2–शैक्षिक स्तर के आधार पर उच्च शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत बालिकाओ के अभिभावको की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

प्रतिदर्श :–

प्रतिदर्श के रूप में हापुड़ जिले में उच्च शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत 100 छात्राओ के अभिभावको को शामिल किया गया हैं। डेटा एकत्र करने के लिए बहुस्तरीकृत यादि्र्क्षक न्यादर्शन विधि का उपयोग किया गया था। शोधार्थी द्वारा आंकड़ो का संग्रहकरने हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

आंकडों का विश्लेषण :–

तालिका–01

क्षेत्र के आधार पर अभिवावकों की बालिकाओ की उच्च शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति

समूह	संख्या	मध्यमान	मध्यमान में अंतर	मानक विचलन	विस्तार गुणांक	सार्थकता स्तर
शहरी क्षेत्रके अभिवावक	50	26.74	0.91	2.02	2.43	0.05
ग्रामीण क्षेत्र के अभिवावक	50	25. 83		2.95		

तालिका 01 बताती है कि हापुड़ जिले में अध्ययनरत बालिकाओ की शिक्षा के प्रति उनके अभिवावकों की अभिवृत्ति में शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के आधार पर अंतर प्राप्त हुआ है। सी आर मान 2.43 पाया गया जो 0. 05 स्तर पर सार्थक है। शहरी माता–पिता का औसत स्कोर ग्रामीण माता–पिता की तुलना में काफी अधिक है अतः कहा जा सकता है कि शहरी माता–पिता लड़कियों की शिक्षा के प्रति अधिक जागरूक है।

तालिका सं–02

शैक्षिक स्तर के आधार पर अभिवावकों की बालिकाओ की उच्च शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति

समूह	संख्या	मध्यमान	मध्यमान में अंतर	मानक विचलन	विस्तार गुणांक	सार्थकता स्तर
शिक्षित अभिवावक	50	26.7	1.57	2.162	2.44	0.05
अशिक्षित अभिवावक	50	25		3.535		

तालिका 02 इंगित करती है कि बालिकाओ की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में अभिवावकों के शैक्षिक स्तर के आधार पर सार्थक अंतर पाया गया है। सी आर मान 2.44 पाया गया है। शिक्षित माता–पिता की अभिवृत्ति का औसत अशिक्षित माता–पिता के औसत अंक से अधिक है जिसका मुख्य कारण यह हो सकता है कि शिक्षित माता–पिता अशिक्षित माता–पिता की तुलना में अपने बच्चो की शिक्षा के प्रति अधिक जागरूक होते हैं।

निष्कर्ष व सुझाव :–

बालिकाओ की उच्च शिक्षा के प्रति अभिभावकों की अभिवृत्ति माप्त्र हेतु एकत्र किये गए आंकड़ो के प्रशासन के आधार पर निष्कर्ष निकाला जा सकता है वह यह है कि शहरी क्षेत्र में निवास करने वाले माता–पिता ग्रामीण परिवेश में निवास करने वाले अभिभावकों की तुलना में बालिकाओं की उच्च शिक्षा के प्रति अधिक तत्परता दिखाते है जागरुक शिक्षित माता–पिता बालिका शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, अशिक्षित अभिवावकों के। अतः दोनों परिकल्पनाए अस्वीकृत हो गई, बालिकाओ का उच्च शिक्षा में प्रतिभाग बढ़ाने हेतु महाविद्यालयों में पृथक महिला प्रकोष्ठ निर्मित व सक्रिय किये जाने चाहिए जहाँ बालिकाओं की समस्याओं को सुनकर उन्हें दूर करने हेतु प्रयास किये जायें। बालिकाओं की उच्च शिक्षा के प्रति उनके अभिभावकों में जागरूकता बढ़ाने हेतु महाविद्यालय स्तर व राजकीय स्तर पर विभिन्न कार्यक्रम जैसे रैली, संगोष्ठी निबन्ध प्रतियोगिताये भाषण प्रतियोगिताये वाद–विवाद प्रतियोगिताये सेमीनार आदि आयोजित किये जयें जिसमें अभिभावकों को भी आमंत्रित किया जाये जिससे बालिका उच्च शिक्षा के प्रति उनके दृष्टिकोण में परिवर्तन आ सके बालिकाओं की उच्च शिक्षा में प्रतिभागिता बढ़ाने हेतु राज्य व केन्द्र स्तर पर समान नीतियां व कार्यक्रम बनाये जायें जिससे राष्ट्र की प्रत्येक बालिका उच्च शिक्षा स्तर तक पहुँच सके। केंद्र राज्य स्तर पर सुरक्षा व्यवस्था विशेष रूप से बालिका व महिला सुरक्षा के संबंध बेहद कड़ी की जानी चाहिए जिससे बालिकाओं को उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु सुरक्षित वातावरण प्राप्त हो सके व बालिकाओं का उच्च शिक्षा में नामांकन बढ़ सके। महाविद्यालयों में व्यावसायिक व रोजगारपरक पाठ्यक्रमों को प्रस्तुत किया जाये जिससे बालिकायें इनकी शिक्षा प्राप्त कर भावी जीवन में आत्मनिर्भर हो सकें। इन्टर कालेजों में निर्देशन एवं परामर्श केन्द्र खोले जाने चाहिए जिससे बालिकायें इंटर के पश्चात् उच्च शिक्षा में प्रवेश हेतु जानकारियां प्राप्त कर मनपसंद क्षेत्र में शिक्षा प्राप्त कर कैरियर बना सकें।

सन्दर्भ सूची :–

Ambreen, M., & Mohyuddin, A. (2014). Gender biased parental attitude toward education, A case study of village Dasaha district, Falsalabad, Pakistan. *Academic Research International.*

Bedanta, K., & Kumar (2020). Role of parental attitude towards girls' education. *IJARIIE*

Das., & Kar. S. (2018). Parental attitude towards girls' education: in relation to community and gender. *International Journal of Research in Social Sciences, 8*(2).

Kamaldeen, A.S., Buhari, A.S. & Parakoyi, D. (2012). Perception attitude and practices of parents in Okene Nigeria toward girl-child education. *International Journal of Science and Research Publication, 2*(8).

Manitombi, K. D. (2020). A study of parental attitude towards girls education in the hill area of Manipur. *International Journal Of Multidisciplinary educational research, 9*(8).

Mishra, A. (2012).*Ucch siksha star pr balika siksha ki samsyayon ka samajik arthik janankkeeya ewm kuch manoveigyanik karno ke sandarbh mein vishlesdatmak adhayayan*. Retrived from http://hdl.handle.net/106.

Samuel A, (2020). *Attitude of parents towards girls child.* Adewuyi University of Ibada.

Subrahmanian, R. (2002). Citizenship and the 'right to education': Perspectives from the Indian context. *IDS bulletin,* 33, 1-10.

Yadav K. (2016). *Parents attitude towards higher education of girls*. Retrived from https://www.researchgate.net

How to cite reference of this paper-

Mishra, A. (2022). बालिकाओ की उच्च शिक्षा के प्रति अभिभावको की अभिवृत्ति का विश्लेषण. *Educational Metamorphosis, 1*(2), 61-66.